रविवार, दिनाँक 03-09-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सातवीं सितम्बर उन्नीस सौ बवन्झा।

रविवार सतवस्तु दा राज हुन हो गया, हो गया, हो गया

वेखसी कुल जहान सतवस्तु दा राज हुन हो गया, हो गया, हो गया

सजनों सतवस्तु के राज का हृदय में स्थापित हो जाना, बहुत अच्छी बात होती है क्योंकि ऐसा इन्सान सतवादी बन जाता है और उसके लिए एकता, एक-अवस्था में आना यानि हर परिस्थिति में एकरस बने रहना किसी भी विध् कठिन कार्य नहीं रहता। यही कारण है कि सतवस्तु में जप-तप-संयम वाला भक्तिभाव नहीं होता अपितु वहाँ तो युवा-अवस्था का भक्तिभाव चलता है। अब यह तो सब जानते ही हैं कि युवा-अवस्था का भक्ति भाव है - समभाव-समदृष्टि की युक्ति। इस सन्दर्भ में समभाव क्या है? क्यों धारण करना उचित है और हमारे लिए किस तरह लाभकारी है, यह हमें समझना है। याद रखो जब तक समभाव हृदय में धारण होकर भावना में नहीं उतरता तब तक हम द्वि-द्वेष से मुक्त नहीं हो सकते क्योंकि हमारा नज़रिया सर्व जो एकरूप व्यापक है, उसे पहचानने में असक्षम रहता है। इसके विपरीत जब नज़रिया समभाव अनुकूल हो जाता है यानि समभाव धारणा में उतर जाता है तो परमेश्वर की सर्व-व्यापकता का दर्शन सहज हो जाता है। ऐसा होने पर स्वतः ही तेरी-मेरी, लड़ाई-झगड़े, तीनों ताप सब समाप्त हो जाते हैं और मानव सत्य का प्रतीक बन आत्मिकज्ञान प्राप्त कर लेता है। आत्मिकज्ञान प्राप्त होते ही आत्मीयता का भाव यानि सजनभाव अनुसार व्यवहार करना उसका स्वभाव बन जाता है। इस तरह जीवन का आनन्द आ जाता है। ऐसा इन्सान जो भी करता है वह सुकर्म ही करता है यानि कर्म, अधर्म अपने घर चले जाते हैं और

सुकर्मों का राज स्थापित हो जाता है। जन्म-मरण का कोई चक्र-व्यूह नहीं रहता क्योंकि अजर-अमर अवस्था का बोध हो जाता है जो अपने आप में जीवन सफल बनाने की बात होती है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सबसे प्रार्थना है कि तेरी-मेरी से ऊपर उठकर सतवस्तु के ग्रन्थ में विदित आद् सत्य को धारण करो और धर्मपरायण इन्सान बन जाओ। ऐसा करने से भक्ति प्रबल और शक्ति ताकतवर हो जाएगी और आप मौत के भय से निर्भय हो जाओगे क्योंकि आपकी अपनी अमरता का भान हो जाएगा। फिर जीवन में जो भी जीव रूप में करने आये हो वह परमात्मा के हुक्म अनुसार सहजता और निर्विकारिता से करते हुए परमात्मा के सुपुत्र कहलाओगे और अन्त अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाओगे। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से सुनोः-

महाबीर जी रहे ने पुकार, 'प्रीति' तूं किस नाल करनैं।

मिथ्या ए संसार, 'प्रीति' तूं किस नाल करनैं।।

ए देही तेरी ख़ाक दी ढेरी, निकल गया चमत्कार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

जिस देही दा अभिमान तूं करनैं, ओ वी ना चलसी तेरे नाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

पंज चोर तेरे अन्दर वसदे, मौत दा घर रहे दिखाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।।

जिस धन दा हंकार कितोई, ओ यमां दा घर रहे दिखाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

मिथ्या महल ते मिथ्या माड़ियां, चार दिनां दी बहार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

जिन्हां पिच्छे तूं कूड़ कमत्तो, ओही आसन तैनूं साड़।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

भाई बन्धु तेरे मित्र प्यारे, कोई न चलसी तेरे नाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

हुण वी सम्भल तूं मूर्ख बन्दिया, जन्म अपना संवार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

मिथ्या संसार दी प्रीति नूं छोड़ के, आओ महाबीर जी दे द्वार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

नाम ध्यावो भैणां उस बली दा, यमां तो लैसन छुड़ा।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

महाबीर जी दे चरणां विच 'प्रीति' बढ़ाओ, रघुनाथ जी नूं देसन मिला।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

दासी ऐही अरज़ां करदी, सुध लवो भैणां सच्चे घर दी।

महाबीर जी अगूं करो नमस्कार, महाबीर जी अगूं करो नमस्कार।।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।

सजनों कलुकाल के घेरे में आई सुरत को सच्चेपातशाह जी अत्यन्त सरल और सीधे शब्दों में समझाते हुए कहते हैं कि यह संसार/शरीर/महल-माडियाँ/भाई-बंधु सब मिथ्या है यानि झूठ हैं। अतः हे इन्सान ! इस खाक़ के साथ प्रीत मत कर अपितु अपने ख़्याल को इस मिथ्या जगत से स्वतन्त्र रख अपने सच्चे घर की भाल कर और उसी ओर प्रस्थान कर। इस सन्दर्भ में हमने भी देखना व समझना है कि हमारा यथार्थ क्या है और जो हमारे साथ अन्य मानव रूप में या किसी भी रूप में जुड़ते हैं, उनका यथार्थ क्या है और उनका लगाव व प्यार किस किस्म का है? इस तथ्य को समझने से आपको ज्ञात हो जाएगा कि यह सब जो मेरे साथ जुड़े हुए हैं, ये मेरे सच्चे साथी नहीं अपितु भ्रम है यानि धोखा है? फिर आपको लगेगा कि अगर यह सब भ्रम है तो मैं इनके लिए इतने पापकर्म कर क्योंकर धन इकट्ठा कर रहा हूँ और अपना जीवन बर्बाद कर रहा हूँ? अन्त में सत्य तो यही है कि न तो छल-कपट से कमाया हुआ यह धन मेरे साथ चलना है और न ही परिवारजनों नें मेरे साथ चलना है।

इस तथ्य को सजनों ध्यान से समझो कि इन तमाम भौतिक साधनों का सुख न तो आप हमेशा भोग सकते हो और न ही आपके परिवारजन भोग सकते हैं। इसका मतलब तो यह हुआ कि हमारे सारे जीवन का यत्न व्यर्थ और निरर्थक है। इसी कारण हम जो मानव चोला हमें मिला है उससे विमुख होकर यानि परमार्थ की राह छोड़ स्वार्थपरता का रास्ता अपना बैठते हैं। यही भूल न केवल इन्सान को अपितु उसके संगी-साथियों को भी ले डूबती है क्योंकि उन पर भी संग का रंग चढ़ जाता है। आज पूरे समाज पर भी यही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का रंग चढ़ा हुआ है। मानो यह अनीति है क्योंकि यह मानव धर्म से सरासर गिरने की बात है। ऐसा मानव नीचता को ही प्राप्त होता है क्योंकि वह प्राणहीन होता है। ऐसा न हो इसलिए सजनों कुदरत के विधान को और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त युक्ति को प्रवान करो। जानो ऐसा करने पर ही यानि उसी के साथ अपने ख़्याल-ध्यान को जोड़ने पर, जीवन में जो करने आये हो, वैसा करने में

समर्थ हो पाओगे। इसीलिए कहते हैं कि सत्संग में या ध्यान-कक्ष की क्लास में जो कहा जाता है उसको सुना-समझा करो और वर्त-वर्ताव में लाने का प्रयास किया करो ताकि आपका इस द्वारे से जुड़ना व सत्संग में आना सफल हो। अतः अपने जन्म के वैरी मत बनो क्योंकि ऐसा इंसान मूर्ख होता है और कदापि सजन भाव नहीं अपना सकता। इसीलिए तो सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हे मानव ! अपने जन्म का वैरी मत बन यानि अपना जन्म मत बिगाड़। इसके स्थान पर अपना जीवन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति समर्पित कर दे। फिर जीवन जीने की जो कला वह सिखायें, वैसा ही जीवन जीना आरम्भ कर दे। इस तरह जीव व जगत के सत्य को जान ले। जानो यह अमरता से जीवन जीने की बात है। अतः ऐसा जीवन जीने के लिए खुद को समझाओ और अपने सजन आप बन जाओ। अब इसी विषय में आगे सुनोः-

श्री रघुनाथ जी अपने सुपुत्र श्री महाबीर जी को कह रहे हैं

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।

कोई विरला ओ बच जासी, जेहड़ा राम शरण जो आसी।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

महाबीर जी अपना बल प्रगट करो, भारत माता जी दे सिर तों भार हरो।

माता जी दे कष्ट निवारण करो, नाम तुहाडा तेजधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

राम नाम नूं हुन याद करो, जन्म अपने नूं आबाद करो।

सतवस्तु दा सजनों राज करो, ओ सबदा शहनशाली है।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

अत्यन्त नाम वल ध्यान धरो, जन्म अपना हुन आज़ाद करो।

सतवस्तु दा सजनों साज करो, ओहदी ताकत अजब निराली है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दी आज्ञा दा पालन करो, संकट टारी माता दा संकट दूर करो।

माता मारे आवाज़ां, ऊंदी विपता हरो, नाम आपदा हनुमान जी बलधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दे वचनां नूं पूरा करो, हो सपुत्र उस दी पीड़ा नूं दूर करो।

हटे अन्धेरा हुन चानणा ज़रूर करो, नाम आपदा न्यायकारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

सजनों यह भारत माता की आवाज़ जन-जन तक पहुँचाने की बात है। इस आवाज़ को सुनकर कौन जागृति में आया, कौन नहीं आया, किसका प्यार भारत माता के प्रति जाग्रत हुआ और कौन यह आवाज़ सुनकर भी अपनी माता की सुध-बुध भूल जगत में खोया हुआ है - इसका निर्णय शीघ्र ही होने वाला है। इस परिप्रेक्ष्य में आप रोज टी. वी में, अखबारों में सुनते-पढ़ते व देखते हो कि सब भारत माता के जोर-जोर से नारे तो लगा रहे हैं पर उसके बच्चों का यानि जो इतने शरीर हैं, उनके नैतिक उत्थान का प्रबन्ध नहीं करते। इसके विपरीत यह तो उनका नैतिक उत्थान न हो उसके लिए पूरे विश्व में असत्य-अधर्म का राज्य स्थापित कर रहे हैं क्योंकि इसी में इन स्वार्थियों को अपना लाभ दिख रहा है जो कि अपने आप में अत्यन्त घिनौनी बात है। ऐसा करना जीवन जीतने की बात नहीं अपितु जीवन हारने की बात है। जानो जो भी मानव रूप में अपनी माता की इज्ज़त नहीं करता वह कुपुत्र कहलाता है। ऐसे कुपुत्र जब भारत माता के नारे लगायें तो समझ आता है कि कैसे हर इन्सान के मन में, परिवारों में व कुल समाज में कलुकाल अपने पग पसार रहा है। जानो यह तो हर मन के अन्दर 'काम' के जाग्रत होने की बात है। अब जहाँ 'काम' होगा वहाँ लोभ-लालच, छीना-झपटी तो होगी ही होगी। इससे दूरियाँ व परेशानियाँ तो बढ़ेंगी ही बढ़ेंगी और सब इसका लाभ उठायेंगे ही उठायेंगे। हमें समझ नहीं आती कि क्योंकर व्यक्तिगत प्रभुत्व जमाने के लिए ये सब फायदा उठाते हैं और सत्य-धर्म का पाठ जनता को पढ़ाने में हिचकिचाते हैं। शायद इन्हें भय लगता है कि अगर हर हृदय में सत्य प्रकाशित हो गया तो पूरे विश्व के सृजनहार का राज्य इस धरा पर स्थापित हो जाएगा, ऐसे में इन्हें कौन पूछेगा? इन अहंकारियों का तब क्या होगा? कहने का आशय यह है कि आज के समय में प्रभुता का भाव अधिकतर मानवों के दिल-दिमाग पर छा गया है। इसीलिए हर प्रकार से दूसरों पर राज करना इन्हें अच्छा लगता है। जानो कि यह अहंकार प्रवृत्ति में ढलने की बात होती है। सजन श्री शहनशाह महाबीर के द्वारे पर होते हुए ऐसी प्रवृत्ति में हमें नहीं ढलना क्योंकि सजनभाव इस द्वारे की नीति है। अतः सबको एक समान समझते हुए व एक सा व्यवहार करते हुए सबने सजनता का प्रतीक बनना है। मतलब यह है कि बड़े-छोटे का सवाल उत्पन्न ही

नहीं करना क्योंकि यह द्वारा सबका साँझा है और यहाँ तूँ-मैं का कोई सवाल नहीं। इसीलिए तो कहा गया है कि स्टेज पर बैठकर अपनी मानता मत कराओ।

सजनों यह बात सबने याद रखनी है और हारना नहीं। चाहे संसारी कितना ही यत्न कर लें पर आपने उनसे मात नहीं खानी अपितु समभाव में स्थित रहना है और सजनता का प्रतीक बनना है। इस सन्दर्भ में विचारना है कि ऐसे समयकाल में जब ''दुनियाँ मुकने वाली है'', आपने अपना परिणाम क्या लेना है? - दग्ध भस्म या फिर परमधाम पहुँच विश्राम को पाना। जानो यह परिणाम आपकी व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर करता है क्योंकि इस दर से इन्सान को जो भी प्राप्त होता है वह उसकी इच्छा अनुसार ही प्राप्त होता है। अतः जीवन में जब भी दुःख आता है तो उसका शोक मत मनाया करो क्योंकि यह आपकी अपनी ही खरीद होती है। उस समय विचारा करा करो कि मैंने ऐसे कर्म किये इसीलिए मुझे ऐसी गति प्राप्त हुई यानि इसमें किसी ने कुछ नहीं किया अपितु यह तो अपनी ही करनी का फल है।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हर मानव को समझाते हैं कि हे मानव ! निष्काम भाव से सुकर्म कर। याद रखो जब मन में सुकर्मों का राज्य स्थापित हो गया तो मन संकल्प-रहित हो जाएगा, असीम मनः शान्ति प्राप्त होगी और जगत से आज़ादी प्राप्त हो जाएगी। याद रखो मनः शान्ति व जगत से आज़ादी स्वतन्त्र बुद्धि होने का प्रतीक है। ऐसा होने पर सब वैर-विरोध समाप्त हो जाते हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों आप भी अपने आप को समझाओ और होश में आओ। इस हेतु समभाव नज़रों में कर समदृष्टि हो जाओ। समदृष्टि हो गये तो दिव्य-दृष्टि का सबक़ मिल जाएगा और त्रिकालदर्शी हो परमात्म नाम कहाओगे। यह है सजनों अपनी यथार्थता को जानना, पहचानना और उसे मानना। ऐसे इन्सान को फिर यथार्थतापूर्ण जीवन जीने में बहुत मजा आता है। तभी तो वह

मोक्ष प्राप्त कर परम आनन्दित हो जाता है। आप सजनों के जीवन का अन्त परिणाम भी ऐसा सुखकारी निकले इस हेतु अपने पर कृपा करो यानि खुद को समझाओ और अपने-अपने परिवार के व कुल समाज के सजन बन परोपकार कमाओ।

इसी सन्दर्भ में सात सितम्बर को सारी बातचीत होनी है। सो उस दिन सबने परिवारों सहित आना है और समय पर अपना स्थान ग्रहण कर लेना है।

इन्हीं शब्दों के साथ सब सजनों को जय सीताराम जी।